उपसंहार

बुढ़ापा जीवन का सत्य है जिसे टाला नहीं जा सकता । भारतीय परिवारों मे बड़े-बुजुर्गों की स्थिति सदा से बहुत महत्वपूर्ण रही है। नई पीढ़ी अपने बड़े-बुजुर्गों से ही मूल्यों और परम्पराओं को लेकर आगे बढ़ती रही है। भारतीय समाज में संयुक्त परिवार की अपनी अलग महत्ता रही है। लेकिन 90 के दशक के बाद भूमंडलीकरण के प्रभावों के चलते कई स्तरों पर परिवर्तन घटित हुए। संयुक्त परिवार धीरे-धीरे समाप्त होने लगे और उनका स्थान एकल परिवारों ने ले लिया। संयुक्त परिवार के खत्म होने के साथ-साथ वृद्धों की भी उपेक्षा होनी शुरू हो गई। घर में पति-पत्नी और बच्चों ने अपना-अपना स्थान तो बना लिया किंतु वृद्धों के लिए उन्हीं के द्वारा बनाए गए आशियाने से बेदखल कर दिया गया। बुजुर्ग अकेलापन, अवसाद, चिंता, असुरक्षाबोध और तमाम तरह की भावनात्मक व्याधियों के शिकार होने लगे। इन सारी विसंगतियों के संदर्भ में यदि हिंदी कहानी-यात्रा की पड़ताल की जाए तो एक सुदीर्घ परंपरा मिलती है।अपने आरंभिक काल से ही हिन्दी कहानियों के पात्रों में तमाम तरह की विविधता देखने को मिलती है। इनमें बुजुर्ग पात्र भी बहुतायत में मिलते हैं। हिन्दी के कथाकारों ने काफी संजीदगी और जिम्मेदारी भाव से बुजुर्ग पात्रों का चित्रण किया है। इस क्रम में सबसे पहले हिंदी के कथा सम्राट प्रेमचंद के यहाँ बुजुर्ग पात्रों की समृद्ध स्थिति देखने को मिलती है । बुजुर्ग संबंधित इनकी कुछ कालजयी कहानियाँ मील का पत्थर साबित हुई हैं। 'बूढ़ी काकी' की काकी, 'पंच परमेश्वर' की खाला, 'ईदगाह' की अमीना आदि हिंदी कहानी के कालजयी बुजुर्ग-पात्र हैं। यह सिलसिला आगे भी बढ़ता है। बाद में नई कहानी आंदोलन में भी हमें कथा-लेखकों का बुजुर्गों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिलता है। राजेंद्र यादव की "जहाँ लक्ष्मी कैद है", शिवप्रसाद सिंह की 'दादी माँ', मार्कण्डेय की 'गुलरा के बाबा,' भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' आदि कहानियों में हमें बुजुर्गों को जानने-पहचानने का मौका मिलता है। कहीं पेंशन के चक्कर में परेशान बुजुर्ग है(भोलानाथ का जीव) तो कहीं रिटायरमेंट के बाद वे घर में अपनी उपेक्षा(वापसी) झेलने पर मजबूर बूढ़ा व्यक्ति है। आगे हम मन्नू भण्डारी की कहानी 'अकेली' देखें

तो इसमें वृद्ध महिला का पति अपनी पितृसत्तात्मक सोच से ग्रसित होने के कारण अब भी बुआ पर बंदिशें लगाता है। नई कहानियों के बाद भी आगे की हिंदी कहानी में बुजुर्ग पात्रों की उपस्थिति महत्वपूर्ण दिखती है जिनमें उनकी आवश्यकताओं , समस्याओं, विश्वासों और समाज में उनकी स्थिति का सत्य उभरकर सामने आता है।

ईस्वी सन 2000 से 2012 के बीच की हिंदी कहानी की बात करें तो कई कहानियाँ बुजुर्गों की हालत को बड़ी गंभीरता से उजागर करती दिखाई देती हैं। ये कहानियाँ हैं- कमलेश्वर की 'देवा की माँ', उदय प्रकाश की 'छप्पन तोले की करधन', एस. आर. हरनोट की 'बिल्लियाँ बतियाती हैं', जोगिन्दर पाल की 'दादियाँ', प्रियंवद की 'पलंग', अवधेश प्रीत की 'अन्यथा', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'अम्मा', कुलबीर सिंह मल्लिक की 'सरजू बूड्ढ़ा', स्वाति तिवारी की 'वैतरणी के पार', नीलाक्षी सिंह की 'रंगमहल में नाची राधा' , मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'प्रेतकामना', कैलाश वानखेड़े की 'घण्टी' और विमल चंद्र पाण्डेय की 'चश्मे'। इन सभी कहानियों में बुजुर्ग चरित्र अपने-अपने अलग-अलग स्वरूप में उपस्थित हैं। बुजुर्ग-पात्रों के वर्गीकरण के लिहाज से देखें तो लिंग के आधार पर जहां स्त्री अपने जीवन से संघर्ष करती दिखती है वही पुरुष भी परिवार और समाज से तालमेल बैठाता हुआ मिलता है। अपनी-अपनी सीमाओं के अंदर वे भिन्न भिन्न तरह की परिस्थितियों का सामना करते हैं। जिस प्रकार पुरुष 'चश्मे','घण्टी' ,'वैतरणी के पार','सरजू बुड्ढा','अन्यथा' तथा 'प्रेतकामना आदि कहानियों में परिस्थितियों' से लड़ते नज़र आते हैं, उसी प्रकार वृद्ध स्त्रियाँ भी कहीं भी पुरुष से कम नहीं ठहरती हैं। बल्कि सीमाओं मे रहते हुए भी पुरुषों से अधिक सशक्त नज़र आती हैं। स्त्रियाँ 'देवा की माँ','बिल्लियाँ बतियाती हैं' ,'अम्मा','छप्पन तोले का करधन' ,'रंगमहल में नाची राधा' ,'दादियाँ, तथा 'पलंग' आदि कहानियों में पुरुष से ज्यादा सचेत व मजबूत दिखाई देती हैं। यदि 'घण्टी' और 'अम्मा' दोनों कहानियों को देखा जाए तो 'घण्टी' में काका का साहब लोग शोषण करते हैं किंतु 'अम्मा' की अम्मा काका की तरह निडर हैं और कभी भी वह परिस्थितियों के आगे झुकती हुई नहीं दिखतीं। कहीं-कहीं पुरुष

विपरीत स्थिति में झुकते हुए मिल जाते हैं। जैसे 'प्रेतकामना' में कुछ समय के लिए प्रोफेसर पंत अपने-आप को बेटे के भय से झुकाते हैं। वृद्ध पिता 'वैतरणी के पार' कहानी में अपनी बेटी को अपनी दयनीय स्थिति के बारे में बताते हैं। उनमें इतना सामर्थ्य नहीं है कि वे परिस्थितियों से डटकर लड़ें। अंत में वे बेटी के साथ चले जाते हैं। 'अन्यथा' कहानी में भी लोगों की पुरानी किताबों और बूढ़े के प्रति बेरुखी को देखकर कहानी के अंत में बूढ़ा किताबें लेकर किसी अज्ञात जगह चला जाता है । इसी प्रकार दूसरी कहानियों में भी पुरुष बुजुर्ग पात्र कहीं न कहीं किसी चीज़ को लेकर ही दबे जरूर हैं । इसके विपरीत वृद्ध स्त्रियाँ किसी भी परिस्थिति में मजबूती से खड़ी नज़र आती हैं।

'अर्थ' यानी पैसे या समृद्धि के आधार पर यदि स्त्री-पुरुष वृद्ध को बाँटें तो हम देखते हैं कि उच्च ,मध्य और निम्न तीनों वर्गों में बुजुर्ग की स्थिति में कोई खास अन्तर नहीं है। परिवार व समाज दोनों ही अपने अपने ढंग से उनका शोषण कर रहे हैं। यह जरूरी नहीं है कि उच्च वर्ग के वृद्ध की उपेक्षा लोगों द्वारा कम और निम्न वर्ग के वृद्ध की उपेक्षा ज्यादा होती हो। हर स्तर पर नज़र दौड़ाई जाए तो बुजुर्गों की स्थिति एक जैसी ही है। यदि 'दादियाँ' कहानी में दादी अकेलेपन की शिकार है तो उच्च वर्ग की कहानी 'प्रेतकामना' में प्रोफेसर पंत भी अकेलेपन के शिकार होते हैं। यदि 'छप्पन तोले का करधन' में दादी को भूखा मारा जा रहा है तो वही स्थिति 'वैतरणी के पार' कहानी में पिता के साथ में भी नज़र आती है। वृद्धों का शोषण या उनकी उपेक्षा 'अर्थ' पर नहीं बल्कि व्यक्ति की मानसिकता पर निर्भर दिखती है।

लगातार बदलती परिस्थितियों के बीच बुज़ुर्गों को पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवार में वैचारिक मतभेद आदि के चलते बुज़ुर्गों के मन में डर व असुरक्षा का भाव रहता है तो वे दूसरे सदस्यों के साथ कई बार खुलकर बातचीत नहीं कर पाते हैं। बच्चे अपना भविष्य बनाने के लालच में वृद्धों को नज़र अंदाज करते हैं, जिसके कारण परिवार में तनाव शुरू हो जाता है और समस्याएं जन्म लेती हैं। 'चश्मे' कहानी में दोनों पीढ़ियों में 'जनरेशन गैप' दिखता है, वहीं 'बिल्लियाँ

बतियाती हैं' में विस्थापन की समस्या से घर के बुज़ुर्गों को प्रभावित होते दिखाया गया है। 'वैतरणी के पार' कहानी में ज़ायदाद के बँटवारे के बाद वृद्ध पिता की अपने ही घर में उपेक्षा दिखाई देती है। मल्टीनेशनल कंपनियों में काम करती आज की युवा पीढ़ी के ऊपर उसका इतना अधिक प्रभाव है कि घर में अकेलेपन का शिकार हुए उनके अपने वृद्ध माता-पिता की सुध लेने का उनके पास समय नहीं है, जिसके कारण वे उनकी स्मृति से भी दूर होते जा रहे हैं। 'प्रेत कामना' कहानी में ऐसे ही जे. एन. यू. के एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर पंत के जीवन को दिखाया गया है, जिसमें एक शहर में रहने के बाद भी लंबे समय से बेटा अपने पिता से मिल नहीं पाता है। 'अम्मा' कहानी में अम्मा अपने उसूलों के खिलाफ़ बच्चों को जाता देख, दोनों बेटों से लड़कर अलग हो जाती है। प्रायः बुज़ुर्गों में अपने घर के लिए लगाव देखा जाता है। 'दादियाँ' कहानी में इसी लगाव के कारण बूढ़ी दादी को पोते से अलग रहना पड़ता है और अंत में वह परिस्थितियों से लड़ते-लड़ते वह दम तोड़ देती है। इन सभी कहानियों में वृद्धों को परिवार व बच्चों से अलग होते देखा जा सकता है।

वृद्धावस्था एक ऐसी स्थिति है जिसका प्राणिशास्त्रीय परिवर्तन *(biological change)* परिवार की गाँठ को ढीला कर देता है। समाज में उनकी उपयोगिता कम होने के कारण परिवार के लोग भी उनकी उपेक्षा करने लगते हैं। नई तकनीकों के आने से यह देखा गया है कि वृद्धों को समाज की नई पीढ़ी से जुड़ने में असुविधा होती है। 'बिल्लियाँ बतियाती हैं' कहानी में अम्मा अपने बेटे से केवल एक मनीऑर्डर के माध्यम से ही जुड़ी हुई है। इसी कहानी में यह भी दिखाया गया है कि समाज में व्याप्त कुछ लालची लोग अकेले रह रहे वृद्धों की संपत्ति पर नज़र रखते हैं, किन्तु कहानी की अम्मा बड़ी चतुर है। वह लोगों की मंशा को भाँप जाती है इसलिए वह लालची लोगों के बहकावे में नहीं आती है। आमतौर पर यह भी देखा जाता है कि बुज़ुर्गों के प्रति हमारे समाज में अब पहले वाला सम्मान नहीं रह गया है। अवधेश प्रीत की कहानी 'अन्यथा' में खुले तौर पर 'ओल्ड इज़ गोल्ड' की उक्ति को नई पीढ़ी द्वारा नकारते हुए दिखाया गया है। युवा पीढ़ी से निर्मित समाज आज दिखावे पर ही जीता है उसे ज्ञान-अनुभव आदि से कोई मतलब नहीं होता,जिसका खामियाज़ा

अनुभवी वृद्धों को भुगतना पड़ता है। इसके अतिरिक्त 'चश्मे' कहानी में बुज़ुर्गों के माध्यम से अंतर्जातीय और अंतरधार्मिक सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है। समाज में जिस तरह से दलित और अन्य कमज़ोर व्यक्ति की उपेक्षा होती आ रही है, उसी तरह वृद्ध और ऊपर से दलित होने के कारण 'घण्टी' कहानी के काका को दोहरी उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार कहानियों में बुज़ुर्गों के सम्मान के अभाव की एक बहुत जटिल समस्या सामने आती है।

यदि सामाजिक समस्याओं की बात की जाए तो यह पाया गया है कि यदि कोई वृद्ध की सेवा कर रहा है तो प्रायः उसे किसी बात का डर होता है या फिर लालच। इसी तरह के उदाहरण 'छप्पन तोले का करधन', 'दादियाँ' कहनियों में मिलते हैं। 'वैतरणी' के पार' कहानी में ज़ायदाद मिलने के बाद बच्चों द्वारा वृद्ध पिता की उपेक्षा करते दिखाया है। जिस पिता ने अपनी पूरी ज़िन्दगी मेहनत कर बच्चों का पेट भरने में ही काट दी, आज उसी पिता को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं। इसी तरह 'अन्यथा' कहानी में देखा जाय तो युवा पीढ़ी द्वारा बूढ़े की उपेक्षा तथा उन्हीं की कारगुजारियों के द्वारा आर्थिक विफलता के कारण बूढ़ा यह सहन नहीं कर पाता है और वह युवा समाज से पलायन कर जाता है। 'देवा की माँ', 'बिल्लियाँ बतियाती हैं', 'अम्मा' आदि कहानियों में बुज़ुर्गों से संबंधित आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक समस्याएँ हमारे सामने आती हैं।

हिंदी कहानियों में चित्रित बुजुर्गों में मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अंतर्गत अकेलापन, यौन कुंठा, नीरसता, असुरक्षाबोध, अजनबीपन आदि दिखाई देती हैं। ये समस्याएँ लगभग वृद्ध स्त्री-पुरुष दोनों में समान रहती हैं किंतु यौन कुंठा की यदि बात करें तो पुरुष इससे अधिक ग्रसित हैं क्योंकि अधिकतर स्त्रियाँ अन्य कार्यों में हमेशा व्यस्त रहती हैं। यदि उनका शरीर ठीक से काम नहीं भी करता है तो बैठे-बैठे बहू-बेटे को सलाह देती हैं। अन्य विचारों के लिए उनके पास समय नहीं बचता है। पुरुष घरेलू कार्य से सदा से ही दूर रहे हैं और बाहर के कार्य करने में जब वो सक्षम नहीं रहते हैं तो अकेले बैठे-बैठे वे अनेक प्रकार की परिकल्पनाएं करने लगते हैं। जब ये परिकल्पनाएं पूरी नहीं होती हैं तो उनके दिमाग में यौन कुंठा उभर आती है। 'प्रेत

कामना', 'अन्यथा', 'दादियाँ','पलंग', 'देवा की माँ' और 'बिल्लियाँ बतियाती हैं' आदि कहानियों में वृद्धों को प्रेम के अभाव के कारण उपजी समस्याओं को देखा जा सकता है। इसके विपरीत 'रंगमहल में नाची राधा' कहानी की वृद्ध दीवानबाई अपने प्रेमी के प्रति गहरी संवेदनात्मक भावनाएँ रखती हैं और अंत में प्राचीन रूढ़ियों और गढ़ी हुई मानसिकताओं को चुनौती देते हुए अपने प्रेमी के पास इस उम्र में भी लौट जाती हैं।

इसप्रकार देखा जा सकता है कि हिंदी कहानियों में बुजुर्गों को लेकर एक संजीदगी और ज़िम्मेदारी का भाव है। कथाकार बड़े-बुजुर्गों के जीवन के तमाम सारे पहलुओं को कुशलता के साथ सामने लाते हैं। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में बुजुर्गों के जीवन से जुड़ी हुई लगभग सभी समस्याएँ कहानियों के केंद्र में हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि कहीं भी बुजुर्ग पात्र हारते या पलायन करते नहीं दिखाए गए हैं,बल्कि वे अपनी समस्याओं से जूझते-लड़ते और उससे निकलते हुए उपस्थित हैं।